अध्याय 19

पल्लवन

'संक्षेपण' के उल्टा होला 'पल्लवन'। संक्षेपण में जहवाँ दिहल अवतरण के निश्चित शब्द संख्या भा तिहाई में सीमित क दिहल जाला उहवाँ पल्लवन में दिहल सूत्रवाक्य भा बीज वाक्य के विस्तार कइल जाला।

पल्लव के अर्थ होला-'पता'। बीज अंकुरित होला, डाल डेहूँगी से होत पात-पात तक छितरा जाला। ओइसहीं बीज रूप में दिहल सूत्रवाक्य के अंकुरित शाखित-प्रशाखित करत पता तक पहुँचावे के क्रिया के **पल्लवन** कहल जाला। एकरा के परिभाषा रूप में कहल जा सकेला कि "पल्लवन ऊ रूपरचना विधान ह जवना में कवनो बीज वाक्य भा सूत्र वाक्य के भीतर छिपल भाव भा विचार के खोल के रखल जाला"। पल्लवन के वृद्धिकरण, विस्तारण, विस्तारित रूप में भाव विस्तार आ भाव पल्लवन भी कहल जाला।

पल्लवन करे में ई बात के धयान रखे के चाहीं-

दिहल सूत्रवाक्य के अर्थ के ठीक से समझला आ समझे लायक बनवला बिना सुन्दर आ प्रभावशाली पल्लवन ना हो सकेला।

1. पल्लवन के बीजवाक्य के बार-बार पढ़ला-गुनला-सोचला के बाद जवन-जवन विचार मन में उठे ओकरा के कलमबद्ध क लेबे के चाहीं।
2. कलमबद्ध भाव भा विचार के क्रमबद्ध क के प्रत्येक विचार के

व्याख्या भा विस्तारित करे के चाहीं। विस्तारित करे में ऊ सब तत्त्वन के उपयोग अलंकरण, मुहावरा, कहावत, उद्धरण, उदाहरण, आ दृष्टांत देबे के चाहीं जेकर संक्षेपण में त्याग कइल जाला।

3. विस्तारित विचार भा भाव के सब अनुच्छेद **क्रमबद्ध आऊर सुसंगत रहे** के चाहीं ना कि अइसन लागे कि अलग-**अलग अनुच्छेद** के लाकं सटा दिहल गइल बा।

4. ई बात के भी धयान राखे के चाहीं कि चिंतन-**मनन से निकलल भाव** भा विचार के विस्तार त होखे बाकिर ओकर **खण्डन--मंडन** ना करे के चाहीं कवनो एगो सुस्पष्ट आ मान्य विचार **लेके आगे बढ़े** के चाहीं।

5. पल्लवन के अर्थ ह विषय के विस्तार। विस्**तार के मतलब** ई ना भइल कि एके बात के बार-बार दोहरावल जाव, **बलुक ई भइल** कि ओह विचार पर भिन्न-भिन्न नजरिया से विचार **कइल जाव।**

6. पल्लवन के विस्तार कतना होखे, विद्वानन **के बीच बखेड़ा** पैदा क दिहले बा। बाकिर जादे लोग के विचार इहे बा कि पल्लवन के आकार निबंधा से छोटा होखे के चाहीं। अगर पंक्ति में सीमित कइल जाव त एकर आकार 10 से 15 पंक्ति तक सीमित रखे के चाहीं।

7. पल्ल्वन खातिर जरूरी बा कि उद्धरण के गूढ़ अर्थ स्पष्ट हो जाव, गूढ़ अर्थ समझे खातिर बार-बार पढ़े के चाहीं।

8. भाषा सरल होखे के चाहीं। कठिन शब्द के प्रयोग आ आलंकरिक चमत्कार पैदा करे के प्रयास में अर्थ-ग्रहण में बाधाा ना पड़े एह बात के भी ख्याल रखे के चाहीं।

9. पल्लवन में मूल भा गौण भाव भा विचार पर टीका-टिप्पणी आ आलोचना ना करे के चाहीं।

10. विस्तारण करे के समय मूल विचार विन्दु से अलग ना भटके के चाहीं घूम फिर के मूल विन्दु पर नजर गड़वले रहे के चाहीं।

11. पल्लवन में शीर्षक ना देबे के चाहीं।

12. पल्लवन यथासंभव वार्तालाप शैली में आ अन्य पुरुष में लिखे के चाहीं।

13. पल्लवन में केहु के कहल भा कहीं लिखल पंक्ति अगर प्रासंगिक होखे त उद्धरण रूप में उपयोग में लावे के चाहीं।

14. पल्लवन के अंतिम रूप देवे के पहिले प्रारूप बना लेबे के चाहीं।

15. पल्लवन में प्रश्नवाचक वाक्यन के उपयोग आ ओकर स्पष्टीकरण के जरिये विस्तार करे के चाहीं।

कुछ उदाहरण

अकेले चना भाड़ ना फोड़ी

कहे के त लोग कहबे करेलन कि अपने ऊपर विश्वास करे के चाहीं। अकेले चले के चाहीं। आपन हाथ जगरनाथ पर भरेसा होखे के चाहीं। इ भी सच बा कि आदमी एह धारती पर आवेला अकेले आ जइबो करेला अकेले। बाकिर इ दुनिया में सब केहू सबकुछ अकेले क लीही असंभव ना त कठिन जरूर बा। अकेले चल के आदमी सफल जरूर बन सके ला बाकिर महान ना बन सके ला। जतना महान लोग दुनिया में भइलन

ऊ कवनो काम के शुरूआत अकेले जरूर कइलन बाकिर सफलता के शिखर पर चढ़ पइलन तबे जब समाज से सहयोग लेहलन। संघ बनाके आपन काम आगे बढ़इलन, एही से कहल जाला **'संघे शक्ति कलियुगे'** मतलब कलियुग में संगठन में ही शक्ति के निवास होखेला।

एह संबंध में अनेक पुरान कथा प्रचलित **बाड़ी स। एगो कथा बा कि** एगो किसान के चार गो बेटा रहले स। चारों आपस में हरमेशा लड़त-झगड़त रहले स। किसान ओहनी के लड़ाई-झगड़ा से परेशान रहत रहल। जब मरे-मरे भइल त सब लइकन के अपना पासे बोलवल स। सभन से एकग गो छड़ी मंगवइल स। सब छड़ी के एक साथ बन्हवा के बारी-बारी से बंडल सभन के देके कहलस के एकरा के जे तूर दी सब संपति ओकर। लइका लोग लगलन तूरे केहू ना तूर सकल। तब ऊ बंडल खोलवा के एकग गो छड़ी बाँट दिहलस आ कहलस कि अब आपन-आपन छड़ी तूर लोग। सभे तूर देलस, तब ऊ बतइलस कि देख लोग एक साथे-एक में मिलके रहब जा त केहूँ तोहनी लोग के सताइ ना दबाई आ खूब प्रगति करब लोग। अगर अइसहीं लड़त झगड़त रहब जा त केहू दबा दिही, एकता में बल होखेला मिलजुल के रहिह जा, इही हमार संपति ह, सबलोग बाँट ल जा।

एकता आऊर सहयोग में बड़ा बल होखेला। एकता आ सहयोग के बल पर दुनिया में असंभव लागेवाला काम भी आसानी से भ गइल बा। कबूतर आ शिकारी के कहनी जानते बानी जा। गाँधी जी भी लाखों बार जेहल जइतन अगर जनता से सहयोग ना ले ले रहितन त देश आजुओ गुलामे बनल रहित।

एकता आ सहयोग में समाइल एही बल के देख के कहल जाला अकेला चना भाँड़ न फोड़े। अकेल चना के भूँजे खातिर भाड़ी में डालल जाय आ कतनो गरम बालू डालल जाए चना फूट ना सकेला। बाकिर जब थोरकी आऊर चना डाल दिहल जाला त सब चना फूट जाला। जादे चना हो जाला त ओहनी के भड़भड़हट से भाँड तक फूट जाला। एही से कवनो बड़ भा महान काम क के महान बने के होखे त मिलजुल के काम करे के चाहीं। अकेले सब काम ना हो सके एही से कहल गइल बा अकेले चना भाड़ ना फोड़ सकेला।

का बरखा जब कृषि सुखानी

कवनो काम समय से कइले पर ठीक रहेला। जब कवनो काम समय पर ना कइके समय के बीतला पर कइल जाला तब काम के उपयोगिता त खत्म होइए जाला, सब मेहनत पर पानिओ फिर जाला। जइसे खेती के समय में पानी ना बरिसे त फसल सूखा जाइ। फसल सूखला के बाद कतनो मूसलाधार बारिस होइ ओकर कवनो उपयोग ना रही जाइ। ठीक समय पर वस्तु के उपयोग ना कइला से वस्तु के सार्थकता तक नष्ट हो जाला। उदाहरण के तौर पर कहल जा सकेला कि जइसे कवनो विद्यार्थी बीतत समय के उपेक्षा करत इ कहस कि परीक्षा आई त देख लेहब, अइसहीं करत-करत परीक्षा के समय भी आ जाला उनकर चिंता बढ़े लागेला। ऊ बेचैन हो उठेलन। समय ही ना रही जाला कि पूरा पाठ इयाद क सकस। समय खोअला के पश्चाताप करे लागे लन, सिर धुने लागे लन, बाकिर कुछुओ हो ना पावेला, कवनो फायदा ना हो पावेला, फेल भी हो

जालन काहे? एही से नू कि ऊ अपना समय के उपयोग ना कइलन। समय से पढ़ाई ना कइलन। एही विचार से मिलत अंग्रेजी में भी कहावत प्रचलित बा Time and Tide wait for none समय आ काल केहूँ के प्रतीक्षा ना करे ला। एह से इ बात शत प्रतिशत साँच बा "का बरखा जब कृषि सुखानी।"

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प पर (✓) आ गलत पर (✗) के निसान लगाईं।

(क) "पल्लवन संक्षेपण' के समानार्थी होला । ( )

(ख) 'पल्लवन शब्द के उत्पति 'पल्लव' से मानल जाला। ( )

(ग) पल्लवन के अर्थ होला विषय के संक्षेपित कइल। ( )

(घ) 'पल्लवन' में बीजवाक्य के तिहाई शब्द संख्या में सीमित क दिहल जाला। ( )

(ङ) पल्लवन के एगो सरल सटीक, सार्थक, आकर्षक आ भाव से संबधित शीर्षक देवे के चाहीं। ( )

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(करे, ना करे, सूत्रवाक्य, विस्तार)

(क) 'पल्लवन में भाषा सरल आ .....होखे के चाहीं। विद्वता प्रदर्शन के प्रयास .....के चाहीं।

(ख) पल्लवन में .....सामान्यतः मुहावरा भा कहावत भा कवनो आप्तवचन होला।

(ग) पल्लवन के अर्थ ह विषय के .....।

(घ) पल्लवन में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग ..... के चाहीं।

(ङ) पल्लवन में भाव से संबन्धित शीर्षक ..... के चाहीं।

(च) पल्लवन के लेखन वार्तालाप शैली में आ अन्य पुरूष में ..... के चाहीं।

3. नपल-तुलल शब्द में उतर दीं।

(क) पल्लवन के का काम ह।

(ख) प्रभावशाली संक्षेपण में कवन कवन गुण होखे के चाहीं। वर्णन कइल जाए।

क्रियाभ्यास

(क) माई,बाबू,दादा, दादी से भोजपुरी में बिसरल जा रहल कहाउत आ मुहाबरा के पूछ के ओकर पल्लवन कइल जाव।